Vol. 2, No. 2 (April 2013) P. 1-3 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

कथक नृत्य की रचनाओं में सौंदर्य

डा0 विधि नागर
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर (कथक नृत्य)
नृत्य विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

मेरे विचार से ''सौंदर्य शब्द'' बहुत निजी है, व्यक्तिपरक है और विचारणीय है क्योंकि यह व्यक्ति की सोच पर निर्भर करता है, कोई वस्तु किसी को सौदर्य से परिपूर्ण लगती है तो किसी को नहीं। कोई उस सौदर्य का रसास्वादन करना चाहता है तो कोई उस ओर देखता भी नहीं। यह शब्द जितना सुख देता है उतना ही विरोधाभास भी उत्पन्न करता है। कथक नृत्य की रचनाओं में सौंदर्य बिखरा पड़ा है। सौदर्य के किस पक्ष को लूँ और किसे छोड़ूँ यह बहुत मुश्किल है। येन केन प्रकारेण। इस बार कथक की कुछ पुरानी लोकोक्तियों को लेते हुए कथक रचनाओं में सौदर्य पर अपनी बात रखने की चेष्टा कर रही हूँ –

1. **अहा ! कैसा सम बाँधा है –**

निगाह ठहर कर रह गई, वाह क्या बात है, क्या अदांज है थाट का, थाट यानि खड़े होने का अंदाज। लखनऊ घराने में थाट में बारीक काम होता है, छोटे–छोटे 2/3 बोल लेते हुए हस्तकों के साथ सम पर आते हैं, विभिन्न खुबसुरत चालें दिखाने का भी रिवाज़ है किन्तु जयपुर घराने में चल थाट नाचने का रिवाज़ है तथा तेजी के साथ सम दिखाने का अन्दाज़। छोटी–छोटी उठाने बरतने का भी विशिष्ट अंदाज है।

2. दृष्टि का भी अपना सम होता है –

दृष्टि के आठ भेद हैं और हर दृष्टि का अपना सौन्दर्य होता है, सम दिखाने के अंदाज होते है तो यह भी सत्य है कि दृष्टि का भी अपना सम होता है। यह नृत्य में सौंदर्य को द्विगुणित करता है।

3. **अंगों का खिलना –**

जैसे गायन में अलाप होता है, आरोह अवरोह के साथ स्वर खिलते जाते हैं वैसे ही नृत्य में भी विलंबित/मध्य/द्रुत तीनों लयों में बोलों का काम खिलता जाता है, अंगों का खिलना इसी को कहते हैं। कसक–मसक, गर्दन का डोरा, कलास, कटाक्ष, अंदाज, हस्तक इत्यादि का लय के साथ धीरे–धीरे बढ़ते जाना ही अंगों का खिलना है तथा कथक नृत्य की बंदिशों में भी इनके प्रयोग से सौन्दर्य खिलता जाता है।

4. **धा तक का थुं गा –**

इन बोलों की जितनी भी चर्चा की जाये कम है। धा तक का थुं गा बोलों में सभी घरानों के गुरूओं ने अपनी–अपनी कल्पना शक्ति और सौन्दर्यात्मकता के साथ काम किया है जैसे – शिवपरन, होली, राधा कृष्ण की छेड़छाड़, मदन–दहन, माखन चोरी, कालिया दहन, पंचदेव स्तुति इत्यादि। हमलोग आज भी उसमें कुछ नया जोड़ने की कोशिश करते रहते हैं।

5. बोलों की करवट बदलकर निकल जाना–

जयपुर घराने में कहते हैं जितने बोल उतने ही पैर, लखनऊ घराने में पैरों के काम में बोलों को पलटने का/काट कर/ निकल कर जाने की प्रथा है। लयकारी की बारीकियाँ बगैर पैर पटके दिखाने का सौन्दर्य।

6. बोलों का धर्म और मिज़ाज –

जैसा बोल हो उसे उसी मिज़ाज के साथ निभाना ही नर्तक का धर्म है, त्राम को हाथ पाँव के साथ वैसे ही करना, थुड़ंग/दिगदिग/थर्र/धिलांग आदि नृत्य बोलों को सौन्दर्य की दृष्टि एवं धर्म के साथ निभाना ही वस्तुतः नृत्य है।

7. हस्तक, निगाह, गर्दन – सब जा रहे हैं पैरों के बोलों के साथ –

हमारे शास्त्रों में लिखा है जिधर हाथ जाएँ उधर दृष्टि, जिधर दृष्टि जाए उधर मन। इसी प्रकार नर्तक दर्शकों को मन के भावों तक ले जाता है। सिर से नख तक बोलों को बरते हुए जाना ही सौन्दर्य में वृद्धि करता हैं। रचनाएँ खिलकर आती है विशेष रूप से मीड़ की बंदिश, फरमाइशी, बढ़ैया, नवहक्का आदि।

8. दायाँ–बायाँ दोनों की तैयारी –

हमारे शरीर में भी दो आँखें/दो कान/दो हाथ/दो पैर हैं। तब भी दाँया–बाँया है। ठीक वैसे ही यदि दाहिना पैर तैयार हो और बाँया नहीं तो भी नृत्य के सौन्दर्य भी कमी दिखती है। नृत्य के सौन्दर्य में इसका भी बहुत बड़ा योगदान है।

9. ध्यान लगाना –

यह बहुत ही सुन्दर बात है, नर्तक नृत्य ही नहीं करता बल्कि ध्यान लगाता भी है और ध्यान लगवाता भी हैं। दर्शक भी ध्यान में चले जाते हैं उन्हें समय/स्थान का ध्यान हीं नहीं रहता है। लय–ताल के साथ एक–एक मात्रा पर चिंतन करते हुए, आनंद लेते हुए रस वृष्टि करते हुए काम करना ही ध्यान लगाना है।

10. **पलटना –**

यहाँ पलटना का अर्थ बात से पलटना नहीं है वरन नृत्य में पलटना शब्द सौन्दर्यात्मक महत्व रखता है। ''वाह क्या पलट है– दर्शक या गुरू कई बार ऐसा कहते हैं क्योंकि नृत्यकार की रचनात्मक क्षमता पलट में बखूबी निखर कर आती है। गत में पल्टे, तत्कार के पल्टे आदि जयपुर घराने में गत उठाने से पहले अनेक प्रकार से पल्टे लेने का रिवाज है। पात्र पलटने में भी पल्टे लेना अनिवार्य है। तोड़े–टुकड़े में भी पलट के अंग हैं जो बहुत सुंदर लगते हैं और नृत्य के सौन्दर्य में चार चाँद लगाते हैं। पल्टों का संबंध नर्तक की साधना तथा रियाज़ से बहुत गहरा जुड़ा हुआ है।

11. **रंग भरना –**

किसी भी बंदिश में सकारात्मक कल्पना शक्ति के अनुसार दर्शकों के हृदय को स्पर्श कर लेना, रसवृष्टि करना, साधारणीकरण होना ही रंग भरना है। चित्रकार जैसे अपने रंगों द्वारा किसी काल्पनिक कृति

को हूबहू दर्शकों के लिए उकेर देता है ठीक वैसे ही बंदिशों में रंग भरते जाना नृत्यकार का निजी सौन्दर्य बोध होता है।

12. क्या बात है ! बहुत मिज़ाज से बरता है –

मिज़ाज से करना अर्थात नर्तक की हर चीज पर पकड़ होना। लय–ताल–दृष्टि–पद संचालन–हस्तक–सूझबूझ–दर्शकों का रूझान, यह छोटी–छोटी बातें मिलकर मिज़ाज बनाती हैं और नर्तक दर्शकों की वाह–वाही लूटता है।

13. तालीम दिखती है –

रचनाओं का सौन्दर्य तभी पूर्ण रूप से विकसित होता है जब अच्छे गुरूओं से साधक ने तालीम पाई हो। ईमानदारी/निष्ठा/रियाज़ – तालीम की आवश्यक पहलू हैं जो बंदिशों के सौन्दर्य में बढ़ोत्तरी करते हैं।

14. **अरे ! इसने तो यह चीज सिद्ध कर ली –**

सिद्ध करने का अर्थ है सौन्दर्य की पराकाष्ठा हो जाना। बंदिश/रचना में कोई भी त्रुटि करना होना अति सुंदर ढंग से बरतते हुए सम तक पहुँचना। इस सम्बन्ध में यह भी उक्ति है कि 40 दिनों तक किसी भी बंदिश को बेनागा रियाज़ करना या चिल्ला बाँधना साधना की सिद्धि में सहायक होती है।

15. रियाज़ दिखता है –

कहते हैं कि वक्त और अनुभव ही सबसे बड़ा शिक्षक है। नर्तक द्वारा की गई साधना समय आने पर लोगों को यह कहने पर मजबूर करवा ही देता है कि ''रियाज़ दिखता है''।

16. अरे ! यह तो ले उड़ा, महफिल लूट ली –

महफिल में नर्तक जब सभी कोनों को छूते हुए दर्शकों का ह्रदय ले उड़ता है तब दर्शक बेसाख़्ता कह उठते हैं कि देखों यह तो ले उड़ा अर्थात सौन्दर्य के सभी पहलुओं को समेटते हुए नर्तक का प्रस्तुतिकरण होता है और वह महफिल लूट लेता है।

जिस प्रकार तीनताल में 16 मात्राएँ होती हैं ठीक उसी प्रकार कथक नृत्य की रचनाओं में सौन्दर्य बढ़ाने हेतु इन 16 उक्तियों का प्रयोग यथासमय दर्शक, गुरू, शिष्य, रसिक, विद्वान आदि करते हैं। निष्कर्षतः कलाओं का प्रयोजन मनोरंजन, रसास्वादन हेतु किया जाता है।